4. श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द

(सुनने में लगभग समान, लेकिन अलग अर्थ वाले शब्द)

उन्होंने गाड़ी में बैठकर गाढ़ी खीर खाई।

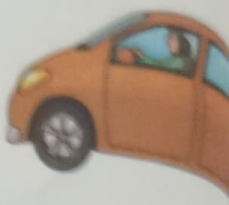

'गाड़ी' और 'गाढ़ी' शब्द सुनने में लगभग एक समान लगते हैं, लेकिन इनके अर्थ में बहुत अंतर होता है।

ऊपर दिए गए वाक्य में भी गाड़ी यानी वाहन और गाढ़ी यानी कम तरलता वाली (thick) में अर्थ का अंतर है। अब आप समझ गए होंगे कि ये दोनों सुनने में लगभग समान, लेकिन अलग अर्थ वाले शब्द हैं। 'श्रुति+सम=श्रुतिसम' का 'सुनने में एक समान' और 'भिन्न+अर्थक=भिन्नार्थक' का अर्थ है 'अर्थ में भिन्नता' यानी अ होना। इस प्रकार कहा जा सकता है कि–

> अर्थ में अलग, किंतु पढ़ने और सुनने में लगभग एक जैसे शब्दों को 'श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द' कहते हैं।

उदाहरणार्थ– रमन और राजन ऑडिटोरियम की ओर गए हैं।
और (तथा, एवं आदि) ओर (तरफ़, दिशासूचक शब्द)

कुछ प्रमुख श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द, उनके अर्थ एवं वाक्य प्रयोग–

1. अवधि [स्त्री०] (समय)– इस सड़क की मरम्मत एक सप्ताह की अवधि में पूर्ण हो जा
   अवधी [स्त्री०] (हिंदी की एक उपभाषा)– अवधी भाषा में बहुत सारे ग्रंथ रचे गए हैं।
2. अंदर [क्रि०वि०] (भीतर)– गुफ़ा के अंदर बहुत अँधेरा था।
   अंतर [पु०] (भेद, फ़र्क)– दुनिया में आज भी छोटे-बड़े का बहुत अंतर है।
3. अपेक्षा [स्त्री०] (आशा, तुलना में)– किसी को भी उनसे ऐसी अपेक्षा (आशा) नहीं थी
   उपेक्षा [स्त्री०] (अनदेखी, तिरस्कार)– गरीबी के कारण उसके रिश्तेदार भी उसकी उ करते हैं।
4. अचार [पु०] (एक चटपटा खाद्य पदार्थ)– अचार के बिना खाना अधूरा-सा लगता है।
   आचार [पु०] (आचरण)– हमारे आचार-विचार में पवित्रता होनी चाहिए।
5. अन्न [पु०] (अनाज)– उपवास में फलाहार करते हैं, अन्न नहीं खाते।
   अन्य [पु०] (दूसरा)– अच्छे लोग अपने साथ अन्य लोगों को भी आगे ले जाते हैं।
6. ओर [दिशासूचक शब्द] (तरफ़)– प्रधानाचार्य जी को अपनी ओर आता देखकर सभी बच्चे हो गए।

और [योजक शब्द] (तथा)– परीक्षा करीब आई और बच्चों ने पढ़ाई शुरू कर दी।

7. की [स्त्री०] (संबंध कारक की विभक्ति, करना क्रिया का भूतकालिक रूप)– रोहन ने अपनी अध्यापिका जी से अपने कुछ मित्रों की शिकायत की।

कि [समुच्चयबोधक] (दो वाक्यों को जोड़ने का कार्य)– रोहन ने कहा कि वे सब उसके बैग से अक्सर चीज़ें निकाल लेते हैं।

8. कर्म [पु०] (कार्य)– हमें सदैव अच्छे कर्म करने चाहिए।

क्रम [पु०] (नियत क्रम में होना)– कक्षा के सभी बच्चे क्रम से स्वास्थ्य जाँच करवा रहे थे।

9. फन [स्त्री०] (फण, साँप के सिर के पास का वह भाग, जिसे फैलाकर वह छत्र के समान बना लेता है)– फन फैलाए खड़े साँप को देखकर किसी के भी प्राण सूख सकते हैं।

फ़न [अरबी शब्द, पु०] (हुनर, कला)– नौशाद साहब संगीत के साथ-साथ शायरी के फ़न में भी माहिर थे।

10. तेज [संस्कृत शब्द, पु०] (चमक)– विवेकानंद जी के चेहरे पर बहुत तेज था।

तेज़ [अरबी शब्द, क्रियाविशेषण] (गति से, ज़ोर से)– शताब्दी एक्सप्रेस ट्रेन बहुत तेज़ चलती है।

कुछ अन्य श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द और उनके अर्थ–

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
1. अंत [पु०]	समाप्ति	2. अगवाई [स्त्री०]	अगवानी/स्वागत
अंत्य [वि०, पु०]	अंतिम	अगुवाई [स्त्री०]	नेतृत्व
3. अतल [पु०]	गहरा	4. अवलंब [पु०]	सहारा
अतुल [पु०]	तुलना रहित	अविलंब [क्रि०वि०]	जल्दी
5. अविराम [क्रि०वि०]	लगातार	6. आकर [पु०]	खान, भंडार
अभिराम [वि०, पु०]	सुंदर	आकार [पु०]	रूप या बनावट
7. आदि [वि०, पु०]	लगातार	8. आसन [पु०]	बैठने की वस्तु
आदी [वि०, पु०]	अभ्यस्त, लती	आसन्न [क्रि०वि०]	निकट
9. इतर [वि०, पु०]	अन्य, दूसरा	10. उदर [पु०]	पेट
इत्र [क्रि०वि०]	सुगंधित पदार्थ	उधर [क्रि०वि०]	उस ओर
11. उदार [वि०, पु०]	दयालु	12. उपयुक्त [पु०]	सही
उधार [पु०]	कर्ज़	उपर्युक्त [वि०]	ऊपर कहा गया
13. कांति [स्त्री०]	चमक	14. कुल [पु०]	वंश, योग
क्रांति [स्त्री०]	आंदोलन, बदलाव	कूल [पु०]	किनारा

15. कोश [पु०]	भंडार	16. खाना [पु०]	भोजन
कोष [पु०]	खज़ाना	ख़ाना [पु०]	जगह
17. गण [पु०]	समूह	18. गृह [पु०]	घर
गण्य [वि०, पु०]	गिनने योग्य	ग्रह [पु०]	अंतरिक्ष के ग्रह
19. चालक [पु०]	ड्राइवर	20. छतरी [स्त्री०]	छोटे आकार का
चालाक [वि०, पु०]	चतुर	क्षत्रिय [पु०]	राजपूत
21. ज़लील [अरबी, वि०]	अपमानित	22. ज़रा [क्रि०वि०]	थोड़ा
जलील [अरबी, वि०]	शरीफ़, महान	जरा [पु०]	बुढ़ापा
23. दबा [क्रि०]	दबाना	24. द्विप [पु०]	हाथी
दवा [स्त्री०]	औषध	द्वीप [पु०]	टापू
25. नियत [वि०]	तय	26. नीर [पु०]	पानी
नीयत [पु०]	इरादा, इच्छा	नीड़ [पु०]	घोंसला
27. पर्ण [पु०]	पत्ता	28. परिणाम [पु०]	नतीजा
प्रण [पु०]	प्रतिज्ञा	परिमाण [पु०]	मात्रा
29. परुष [वि०]	कठोर	30. बूरा [पु०]	सफ़ेद रंग का मी
पुरुष [पु०]	व्यक्ति	बुराई [वि०, पु०]	खराब
31. मात्र [निपात]	केवल	32. मूल [पु०]	जड़
मातृ [स्त्री०]	माता	मूल्य [पु०]	दाम
33. शौक [पु०]	चाव	34. सन [पु०]	पौधा, जिससे रस्सी
शोक [पु०]	दुख	सन् [पु०]	वर्ष
शोख [अरबी, वि०]	नटखट	सन्न [पु०]	हैरान, स्तब्ध
35. हय [पु०]	घोड़ा	36. हरि [पु०]	भगवान
हिय [पु०]	हृदय	हरी [पु०]	हरे रंग की

पाठ एक नज़र में

- अर्थ की दृष्टि से अलग, किंतु पढ़ने और सुनने में लगभग एक समान शब्दों को 'श्रुति भिन्नार्थक शब्द' कहते हैं।
- श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्दों की जानकारी से सही जगह पर सही अर्थ वाले शब्दों का प्रयोग क आता है।